प्रवचन नोट्सः

''क्या आप वहीं थे?''

यह प्रश्न पूछते हुए एक पुराना आत्मिक गीत है। ''जब मेरे प्रभु को क्रूस दिया गया, क्या तुम वहीं थे?''; ''जब उन्होंने उसे वृक्ष पर चढ़ाकर कीलें ठोकी, क्या तुम वहीं थे?''; ''जब सूरज ने चमकने से इनकार कर दिया, क्या तुम वहीं थे?'' पूरे गीत में एक बात बार-बार आती है, ''कभी-कभी मुझे यह कंपा देता है, कंपा देता है, कंपा देता है।''[1]

इस गीत को पहली बार सुनने पर हो सकता है कि हमारी प्रतिक्रिया हो, ''कितना बेतुका प्रश्न है! यीशु की मृत्यु तो मेरे पैदा होने से दो हज़ार साल से भी अधिक समय पहले हुई थी। मैं वहां कैसे हो सकता था?'' परन्तु, गीत हमें उन लोगों में अपने अन्दर झांकने की चुनौती देता है, जिन्होंने उस समय मसीह की मृत्यु को देखा था। यदि हम ईमानदारी से अपने जीवनों की तुलना गुलगुता पर खड़े उन लोगों से करें, तो सचमुच यह हमें ''कंपा देगा, कंपा देगा, कंपा देगा।''

नीचे वे कुछ लोग हैं, जो उस समय क्रूस के पास थे। क्या आपको लगता है कि इनमें से कोई आप जैसा है? ''जब प्रभु को क्रूस दिया गया, क्या तुम वहीं थे?''

उदासीन सिपाही[2]

पतरस ने उन्हें ''अधर्मी'' लोग कहा (प्रेरितों 2:23)। वे सरकारी ड्यूटी करने वाले कर्मचारी थे, जिन्हें अधिकारियों द्वारा दिए गए काम को पूरा करते हुए पीड़ा और मृत्यु देखने की आदत पड़ गई थी। मसीह को क्रूस पर उठाते हुए उनके मन में किसी प्रकार की कोई भावना उत्पन्न नहीं हुई थी। बहुत से लोग आज यीशु और उसके बलिदान के प्रति उदासीन हैं।

असंगत भीड़ (यहूदी पुरोहितों के पीछे लगने वाली)

कुछ लोग घृणा के कारण और कुछ अज्ञानता के कारण यीशु को ठट्ठे कर रहे थे। दोनों ही तरह से वे परमेश्वर के निष्पाप पुत्र का अपमान कर रहे थे। लोग आज भी हमारे प्रभु को समझने में नाकाम रहते हैं, कुछ तो घृणा के कारण और अधिकतर अज्ञानता के कारण।

पश्चात्तापहीन और पश्चात्ताप करने वाला डाकू

कुछ लोगों के मन पर क्रूस का कोई असर नहीं होता (उस पश्चात्तापहीन डाकू की तरह) चाहे उनके जीवन में त्रासदी हो जाए। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि ऐसे लोग हैं, जो

मुश्किल के समय उसके पास लौट आते हैं (उस पश्चात्तापी डाकू की तरह)।

अद्वितीय शोक करने वाले

ऐसे विशेष लोग आज भी हैं, जो अपनी आंखों में आंसू लिए बिना क्रूस का अपमान नहीं कर सकते।

अनभिज्ञ भीड़

जब यीशु ने ''एली'' पुकारा, तो उन्होंने सोचा कि उसने ''एलिय्याह'' कहा है और यह देखने के लिए बैठ गए कि एलिय्याह कब आता है। जब लोग थियोलॉजी में उलझ जाते हैं, तो वे व्यवहार में भी उलझ जाएंगे।

प्रभाव डालने योग्य दर्शक

सूबेदार और सिपाही यीशु की मृत्यु और उसके बाद आए भूकम्प से प्रभावित हो गए थे। भीड़ के लोगों ने अपनी छातियां पीटी थीं। क्या आप क्रूस को देखकर प्रभावित हुए बिना रह सकते हैं?

टिप्पणियां

[1]बार्टन'स *ओल्ड प्लैंटेशन हिम्नस,* 1899; प्रेज फ़ॉर द लॉर्ड, सम्पादक जॉन पी. वेगैन्ड (नैशविले: प्रेज़ प्रैस, 1997) में उद्धृत। [2]आप को चाहिए कि रोमी सिपाहियों को उनकी रंगदार यूनिफॉर्मों में यहूदी अगुओं को उनके प्रभावशाली चोगों में दिखाते हुए कुछ वर्गों के शब्द चित्र बनाएं।